पंडित दीनदयाल उपाध्याय शेखावाटी विश्वविद्यालय सीकर

SYLLABUS

B.A. PART-II

EXAMINATION-2023-24

हिंदी साहित्य

B.A. Part –II 2023-24

बी.ए. वर्ष द्वितीय – हिन्दी साहित्य
प्रथम प्रश्न पत्र – (रातकाल)

पूर्णांक 100 — न्यूनतम उत्तीर्णांक 36

1. केशवदास — रामचन्द्रिका – राम वंदना – पूरण पुराण अरू..... देती मुक्तिको.....
सूर्योदय वर्णन – 1. अरूण गात अति प्रात..... दिन भामिनी की भाल को।
2. व्योम में मुनि देखिए..... तिक्षिता तिनकी हुई।
पंचवटी वर्णन – 1. फल फूलन पूरे..... रति मधु जाने
2. सब जात फटी ..... धूर जटि पंचवटी।
3. सोभित दडंक की रूचि ..... जनु मूरति लसै।
हनुमान लंका गमन – 1. हरि केसो वाहन ..... हनुमान चल्यौ लंक को।

2. बिहारी (20 दोहे)
– मेरी भव बाधा हरौ.....
– तजि तीरथ हरि राधिका.....
– नाच अचानक ही उठै बिन पावक.....
– कहत नटत रीझत खिझत.....
– नेहन नैनन को कछु उपजी बड़ी बलाय .....
– पाय महावर दैन को नाइन बैठी आय .....
– मंगल बिन्दु सुरंग मुख शशि केसर.....
– अंग–अंग नग जगमगत दीपशिखा सी देह.....
– भूसन भारू सम्भारि है.....
– कीनै हू कोटिक जतन अब कहि.....
– या अनुरागी, चित्त की .....
– जद्यपि सुंदर सर पुनि सगुना दीपक देह.....
– कहा कहौं वाकीदसा हरि प्राणन केइस.....
– पत्रा ही तिथि पाइए वा घर के चहूं पास.....
– निस अंधियारी नील पटु, पहरे चलि पियगेह.....
– औंधाई सीसी सुमुखि विरह अगन बिललात.....
– इति जावत उत जात सखि.....
– लाल तुम्हारे बिरह की अगन अनूप अपार.....
– कहलानै एकत बसत अहि मयूर मृग बाघ.....
– कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय .....
– कौ कहि सकै बड़ेन सौ लरवै बड़ी हू भूल.....
– नहि पराग नहि मधुर मधु.....
– मरत प्यास पिंजरा परयौ सुआ समय के फेर.....
– जगत जनायौ जेहि सकल सोहरि.....
– तो लगि या मन सदन में.....

3. देव
– जाकै न काम न क्रोध विरोध.....
– कोऊ कहौ कुलटा कुलीन अकुलीन कहौ.....
– रावरौ रूप रहयौ भरि नैनन.....
– गंग तरंगिनी बीच तरंगिनि .....

- ऐसे जु हौ जानत कि जैहे तु विषय के संग,..............
- डार द्रुम पालना बिछौना नव पल्लव के ....
- जब तै कुंवर कान्ह रावरी कला–निधान..............
- राधिका कान्ह को ध्यान करै तब कान्ह ....
- माखन सों मन दूध सौ जोबन..............
- को बचिहै यह बैरी बसन्त पै आवत...............

4. भूषण

- साजि चतुरंग–सैन्न अंग मैं उमंग धारि सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है।
- बाने फहराने घहराने घंटा गजन के नाहीं ठहराने रावराने देसदेस के।
- बेद राखे बिदित पुरान परसिद्ध राखे राम–नाम राख्यो अति रसना सुघर में।
- उत्तरि पलँग तें न दियो हैं धरा पै पग तेऊ सगबग निसिदिन चली जाती हैं।
- ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहनवारी ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहाती हैं।
- अत्तर गुलाब चोवा चंदन सुगंध सब सहज सरीर की सुबास बिकसाती हैं।
- सोंधे को अधार किसमिस जिनको अहार चार अंक–लंक मुख चंदके समानी हैं।
- आपस की फूट ही तें सारे हिंदुवान टूटे टूट्यो कुल रावन अनीति अति करतें।
- भुज–भुजगेस की बैसंगिनी भुजंगिनी सी खेदि खेदि खाती दीह दारून दलन के।
- अति सौंधे भरी सुखमा सु खरी मुख ऊपर आइ रहीं अलकैं।

5. धनानंद –

1. छवि कौ सदन, मोदमंडित बदन–चन्द
2. भोर, ते सांझ लौ कानन ओर निहारति बावरी नैक न हारति
3. सोएँ न सोयबो, जागे न जाग, अनोखियै लाग सु अँखिन लागी
4. नित द्यौस खरी, उर मांझ अरी, छवि रंग–भरी मुरि चाहनि की
5. अन्तर उदेग–दाह, अँखिन प्रवाह–आँसू
6. नैनन मैं लागै जाय, जागै सु करेजे बीच
7. दिननि के फेर सों, भयो है हेर–फेर ऐसौ
8. कौन की सरन जैये आप त्यों काहू पैये
9. जासौं प्रीति ताहि निठुराई सों निपट नेह,
10. मीत सुजान अनीत करौ जिन, हा हा न हूजियै मोहि अमोहि

6. आलम

1. रूचिर बरन चीरू चन्दन चरचि सुचि,...............
2. अँखियाँ भली जू ऐसे अँसुवनि धारै, नातो, ...
3. चाहती सिंगार तिन्हैं सिंगी को सगाई कहा, ...
4. बारैं तें न पलक लगत बिनु साँवरे ते, ...
5. सीत रिपु भीत भई छाती राती ताती तई, ...
6. लता प्रसून डोल बोल कोकिला अलाप केकि,
7. पालन खेलत नन्द ललन छलन बलि, ...
8. दैहों दधि मधुर धरनि धर्‌यो छोरि खैहैं, ...
9. नीके न्हाइ धोइ धूरि पैतो नेक बैतो आनि, ...
10. गोरस गुलेरी लिये संभु ताको मत दिये, ...

7. पद्माकर

1. कूलन में, केलिन, कछारन में, कुंजन में, ...
2. औरै भाँति कुंजन में गुंजरत भौंरे–भीर, ...
3. चंचला चमाकैं चहूँ ओरन तें चाह–भरी,.....
4. आयी हौ खेलन फाग इहाँ वृषभानपुरी तें सखी सँग लीने।.....
5. सीज ब्रज चंद पै चली यों मुखचंद जा को, ...
6. ऐसी न देखी सुनी सजनी धनी बाढ़त जात बियोग की बाधा।.....
7. तीर पर तरनि–तनूजा के तमाल–तरे, ...
8. फहरे निसान दिसानि जाहिर, धवल दल बक पांत से।.....
9. सिर कटहिं, सिर कटि धर कटहिं, धर कटि सुहय कटि जात हैं.....
10. किल किलकत चंडी, लहि निज खंडी, उमडि, उमंडी, हरषति है.....

8. सेनापति

1. राखति न दोपै पोपै पिंगल के लच्छन कौं, ...
2. बानी सौं सहित सुबरन मुँह रहै जहाँ .....
3. करत कलोल स्रुति सीरघ, अमोल, तोल, ...
4. कालिंदी की धार निरधार है अधर, गन.....
5. सोहै सँग आलि, रही रति हु के उर सालि, ...
6. मालती की माल तेरे तन कौ परस पाइ, ...
7. मानहु प्रबाल ऐसे ओठ लाल लाल, भुज, ...
8. बरन बरन तरू फूले उपवन बन, ...

अंक विभाजन

कुल चार व्याख्याएं (एक कवि से केवल एक व्याख्या) (आन्तरिक विकल्प देय) 4 x 10 = 40 अंक

कुल चार निबन्धात्मक प्रश्न – एक कवि से संबंधित एक ही प्रश्न (आन्तरिक विकल्प देय)

4 x 15 = 60 अंक